डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 6 मार्च 2009 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - छठा | अंक-ग्यारहवां | मार्च-2009 | मासिक पत्रिका

5

ऐब

(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

23

सवाल-जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

27

प्रेम-विरह

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
के मुखारविन्द से अनमोल वचन
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया। फोन - 9950 556671

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन - 9928 925304 **उप सम्पादिका :** नंदिनी

सहयोग : रेणु सचदेवा, रोज़ी आनन्द , परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम (84)
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

जब सतसंगी कोई गलत काम करता है तो काल अंदर ही गुरु से कहता है, ''इसकी करतूत देख! तूने इसे 'नाम' दिया है।'' सतगुरु दया का पुंज और भरोसे वाला होता है। सतगुरु काल से कहता है, ''मैं इसे सुधारूँगा, इसे मौका दे।'' प्यारेयो! हम अंदर गुरु के लिए परेशनियाँ पैदा करते हैं। हमें सदा ही पवित्र जीवन जीने की आदत डालनी चाहिए।

सन्त-महात्मा हमें बुजदिल बनाने के लिए और समाज परिवार से तोड़ने के लिए नहीं आते। सन्त कहते हैं, ''आप अच्छे इंसान बनें, अपने कुल के प्रति वफादार बनें। हमें देश के प्रति भी कोई बुरा कर्म नहीं करना चाहिए। सन्त-महात्मा हमें दुनिया के प्रति फर्ज और दुनिया में जीने का तरीका भी बताते हैं कि हमें किस तरह दुनिया में रहते हुए अपना रूहानी जीवन बनाना है।''

सन्तमत परियों की कहानी नहीं। सन्तमत सच्चाई पर कायम है। यह एक सच्चाई है कि परमात्मा से मिलने का रास्ता हमारे अंदर है और परमात्मा अंदर से ही मिलता है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

सतगुरु सेवा लगयां कढ़ रतन देवे प्रकाश।

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

ऐब

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

गुरु मैं गुनहगार अति भारी, गुरु मैं गुनहगार अति भारी।

मैं परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में बारम्बार नमस्कार करता हूँ जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया। जीव की ताकत नहीं यह निर्बल है। महाराज जी कहा करते थे, ''अंधे में ताकत नहीं कि वह सुजाखे को पकड़ ले जब तक की सुजाखा आवाज़ देकर अपनी ऊँगली अंधे के हाथ में न पकड़ा दे।''

जब शिष्य अपनी कमजोरियों की तरफ देखता है कि मेरे अंदर इतनी कमजोरियाँ हैं, मैं इतने **ऐब** करता हूँ हो सकता है कि मुझे इन ऐबों के बदले लम्बी और कड़ी सजा भुगतनी पड़े। तब वह सच्चे दिल से विनती करता है हे परमात्मा गुरुदेव! तू लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे क्योंकि मैं लेखा दे ही नहीं सकता। कबीर साहब कहते हैं:

बाप राम सुन बेनती मेरी, तुम स्यों प्रगट लोगन स्यो चोरी।
पहले काम मुग्ध मन किया, ता पै डरपे मेरा जीया।

हे सतगुरु! अब मैं तेरी शरण में आया हूँ तू लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

लेखा करत न छुटिए खिन-खिन भूलनहार।
बख्शनहारा बख्श ले ते नानक पार उतार।

महाराज सावन सिंह जी प्यार से कहा करते थे कि बाहर से तो हम यह कहते हैं कि मैं पापी हूँ, गुनाहगार हूँ लेकिन अंदर से **ऐब** और पाप कबूल करने बहुत मुश्किल हैं। महात्मा या विरोधी ही हमारे ऐब बता सकते हैं। विरोधी तो हमारे सामने ही खड़ा होकर कह देता है कि तुझमें यह **ऐब** है लेकिन महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि आपमें

ये ऐब हैं अगर आप इन ऐबों को छोड़ेंगे तो आपका फायदा होगा लेकिन हम अपने गुनाह मानने की बजाए गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं कि हमें ऐसा क्यों कह दिया कि हममें ये **ऐब** हैं।

हम दूसरों के अवगुण बयान करते हैं लेकिन अपने अवगुणों की तरफ नहीं देखते। जब हम अपने फैले ख्याल को तीसरे तिल पर एकाग्र करते हैं तब हमें पता चलता है कि हम कितने **ऐब** या पाप करते हैं। जब तक हम अपने ऐबों और पापों की तरफ देखकर पछताएंगे नहीं तब तक माफी कैसे मिल सकती है?

परमात्मा सावन सिंह जी यह शब्द- *गुरु मैं गुनाहगार अति भारी* कई बार महाराज कृपाल सिंह जी से सुना करते थे। आप कुल मालिक होकर भी अपने गुरु के आगे एक अपराधी की तरह खड़े हो जाते थे।

महाराज सावन सिंह जी अपने सतसंगों में बताया करते थे कि एक आदमी **ऐब** भी करता है लेकिन माफी माँगने के लिए तैयार नहीं बल्कि सच्चाई पेश करता है तो वह एक गुनाह और कर रहा होता है अगर आप ऐबी के ऐब सुनकर हाँ-हाँ करेंगे तो सुनने वाला भी उतना ही दोषी है जितना दोषी **ऐब** करने वाला है। आप यह भी कहा करते थे कि निन्दा न खट्टी है, न मीठी है न चटपटी है लेकिन फिर भी दिन-रात हमारे साथ चिपटी हुई है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मैं बड़ा गुनाहगार हूँ । जब हम पूरे महात्मा की शरण में जाकर अपने ख्याल को 'शब्द' के साथ जोड़ते हैं तब हमें अपने गुनाह दिखाई देते हैं।

काम क्रोध और छल चतुराई। इन संग है मेरी यारी।।

आप कहते हैं कि मैं कामी हूँ। कामी, क्रोधी, लालची परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकते। काम और 'नाम' की दुश्मनी है, जहाँ काम है वहाँ 'नाम' प्रकट नहीं होता क्योंकि 'नाम' की चढ़ाई ऊपर की तरफ है काम की गिरावट नीचे की तरफ है। जहाँ रात है वहाँ दिन नहीं।

प्यारेयो! जिस हृदय में दिन-रात काम के झोंके उठ रहे हो, वहाँ नाम कैसे प्रकट हो सकता है? क्रोध के कारण हमारे ख्याल फैल जाते हैं। क्रोधी का खून जल जाता है कई-कई दिन तबीयत ठीक नहीं रहती।

मेरे एक ख़ास दोस्त को क्रोध की बीमारी थी। उसे क्रोध में बुखार चढ़ जाता था उसका जिस्म फुँसियों से भर जाता था। क्रोधी के खून में ज़हर पैदा हो जाता है। मैंने उसे प्यार से समझाया कि जब तुझे क्रोध आए तो तू खाना खा लिया कर शायद तू बुखार से बच जाए! लेकिन वह कहता कि मुझमें क्रोध है ही नहीं।

मैंने हँसकर उससे कहा, ''अगर सात समुद्र पार से कोई डॉक्टर आकर इस बात को झूठा साबित कर दे तो मैं तेरा देनदार हो जाऊँगा।'' मालिक की मौज यहाँ सात समुद्र पार से एक डॉक्टर आया। मेरा वह दोस्त बड़े चाव से डाक्टर के पास जाकर खड़ा हो गया कि शायद यह डॉक्टर मेरी फुँसियों का इलाज कर दे! डॉक्टर ने उसे देखकर कहा, ''तुझे क्रोध की बीमारी है।'' उस समय कई प्रेमी पास खड़े थे। वह इंकार करने लगा तो मैंने कहा अब तो सच बोल दे। सच बोलने में ही तेरा फायदा है। कबीर साहब कहते हैं:

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होए।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोए।

इस मैदान में कोई बहादुर आदमी ही पार होता है। जो काम, क्रोध और लालच में नहीं फँसता वही बहादुर है। आप कहते हैं कि मेरी काम, क्रोध के साथ दोस्ती है अगर कोई मुझे इन्हें छोड़ने के लिए कहता है तो मुझे गुस्सा आता है कि मेरे यारों से दोस्ती छुड़वाते हैं।

लोभ मोह अहंकार ईर्षा। मान बड़ाई धारी।।

लोभी हमें कहीं भी धोखा दे सकता है। गुरु नानक जी कहते हैं:

लोभी दा वसाह न कीजे जेकर पार वसाए।
अन्त काल तिथे धोए जित्थे हथ न पाए ।

मेरे अंदर लोभ है, ईर्ष्या है। यहाँ हर आदमी अपने-अपने कर्मों का भुगतान करने के लिए आता है अगर कोई अपने कर्मों के कारण या मेहनत करके फलता-फूलता है तो उसे देखकर मुझे बहुत ईर्ष्या होती है कि यह क्यों फल-फूल रहा है? मैं जहाँ भी जाता हूँ मान चाहता हूँ कि सब मुझे यह कहें कि यह बड़ा अच्छा आदमी है।

कपटी लम्पट झूठा हिंसक। अस अस पाप करा री।।

मैं बाहर से तो मीठा बोलता हूँ लेकिन मेरे अंदर कपट है। मैं हिंसा से भी बाज नहीं आता, अपनी जीभ की खातिर अनेकों कत्ल करता हूँ। जुबान से और हृदय की कल्पना से भी हिंसा करता हूँ। हे गुरु रूप परमात्मा! तू मुझे बख्श दे।

दुक्ख निरादर सहा न जाई। सुख आदर अभिलाष भरा री।।

सारे वेद-शास्त्र और सन्त-महात्मा यही कहते हैं कि परमात्मा न किसी को दुख देता है न सुख देता है। परमात्मा रहम दिल है, रहम ही करता है। दुख-सुख हम अपने ही कर्मों का भोगते हैं। हम जो बीजते हैं वही काटने के लिए आ जाते हैं। जो मिर्चें बीजता है वह मिर्चें काटता है। जो ईख बीजता है वह ईख काटता है। हमने बीजते समय सोचना है कि हमने मीठा फल खाना है या फीका खाना है? फरीद साहब कहते हैं:

लोड़े दाख बिजोरिया कीकर बीजे जट्ट।
हंडे ऊन कताऐंदा ते पेंदा लोड़े पट्ट।

हम कीकर बीजकर आम कैसे खा सकते हैं? भेड़ो-बकरियों की मोटी ऊन कातकर रेशम कैसे पहन सकते हैं? हम एक नहीं हजारों ही गुनाह करते हैं फिर परमात्मा में नुख्स निकालते हैं कि मेरे साथ परमात्मा ऐसा क्यों करता है?

सुख की अभिलाषा करते है कि दुनिया की सारी ऐशो-ईश्रतें मुझे मिल जाए! सब कुछ पाकर भी खुश नहीं होते। हमारा दिल किसी न किसी चीज़ के लिए तड़प रहा होता है।

बिंजन स्वाद अधिक रस चाहे। मन रसना यही चाट पड़ा रही।।

मैं अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट खाने खाना चाहता हूँ। देखने में आता है कि जो लोग अच्छे खाने के मोहताज़ हैं अगर उन्हें बेस्वाद खाना मिल जाए तो वे मरने के लिए तैयार हो जाते हैं लेकिन बेस्वाद खाना नहीं खा सकते। कोई जीभ का स्वादु बन जाता है तो कोई काम इन्द्री के बस में आ जाता है। क्या ऐसे में हम भजन कर सकते हैं? हम तो अरदास भी नहीं कर सकते कि हे गुरुदेव! मुझमे ये **ऐब** हैं तू मुझे इनसे बचा।

धन और कामिन चित्त बसाये। पुत्र कलित्तर आस भरा री।।

जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है हमें उस पर भरोसा नहीं कि वह देगा जबकि वह देता भी है। हम अपने बेटे से आशा रखते हैं कि यह बड़ा होकर हमें खिलाएगा! कोई औरत का भक्त बना बैठा है तो कोई कौम का भक्त बना बैठा है लेकिन देने वाले पर ऐतबार नहीं।

धन्ना भक्त अपनी बानी में लिखते हैं, ''पत्थर के अंदर कीड़ा होता है वहाँ किसी तरफ से भी अंदर जाने का रास्ता नहीं होता लेकिन परमात्मा पत्थर के अंदर भी कीड़े को रोजी पहुँचाता है। परमात्मा कीड़े-पतंगों को रोजी देता है क्या इंसानों को नहीं देगा? वह देता है।''

जब हमारा जन्म होता है उस समय माता के स्तनों में दूध आ जाता है। उस समय हम कौन-सी कमाई करते हैं या हमने वहाँ कौन-सा खज़ाना इकट्ठा करके भेजा होता है? परमात्मा हमारी पैदाईश के समय माता के स्तनों में दूध लाया, हमें वहाँ खुराक दी लेकिन हम जैसे-जैसे बड़े होते हैं परमात्मा का आसरा छोड़ देते हैं और दुनिया का आसरा रख लेते हैं।

नाना विधि दुख पावत पापी। तो भी यह करतूत न छाँड़ी।।

हम रोज़ इन चीज़ों से कष्ट सहते हैं। कभी पत्नी पति को कष्ट देती है तो कभी पति पत्नी को कष्ट देता है। इसी तरह कभी बेटा बाप

को तो कभी बाप बेटे को कष्ट देता है। हम दिन-रात अपने मतलब के कारण ही एक दूसरे से चिपटे रहते हैं। जब किसी का मतलब हल हो जाता है तो कौन किसको पूछता है? गुरु तेग बहादुर साहब कहते हैं:

जब ही निर्धन देखया नर को साथ छोड़कर भागे।

जब हमारे पास सारे सुख होते हैं तब सारे रिश्तेदार, दोस्त हमारे साथ रिश्ता जोड़कर बैठ जाते हैं लेकिन जब देखते हैं कि यह बूढ़ा हो गया है अब कुछ नहीं कमाता तो सारे साथ छोड़ देते हैं। हम फिर भी परमात्मा पर आसरा नहीं रखते तकलीफ सहते हुए भी दुनिया के साथ ही चिपटे रहते हैं।

यह मन दुष्ट काल का चेरा। नित भरमावत निडर हुआ री।।

अब सेवक कहता है, ''हे गुरुदेव! मैं जो कुछ भी करता हूँ यह सब मुझसे मेरा मन करवाता है। यह मन काल का एजेंट मुझे हिरन की तरह इन चीज़ों में फँसाए रखता है।''

जब जब चोट पड़ी दुक्खन की। तब डर डर कर भजन करा री।।

हे गुरुदेव! जब दुख, बीमारी या बेरोज़गारी आती है उनसे छुटकारा पाने की खातिर मैं तेरी याद में बैठ जाता हूँ; जब वह समय निकल जाता है तो मैं फिर तुझे बिसार देता हूँ।

देखो दया मेहर सतगुरु की। उसी भजन को मान लिया री।।

सन्त गरीब नवाज़ होते हैं। परमात्मा ने उनके अंदर बड़ी भारी माफी और दया रखी होती है इसलिए वे सोचते हैं कि बेशक इसने दुख के डर से थोड़ा-सा भजन किया है, वे उसी को भजन मान लेते हैं।

बुद्धि चतुराई बचन बनावट। हार जीत की चरचा धारी।।

सेवक कहता है कि मैं बुद्धि के बल से चतुर बनता हूँ मुझमें ये **ऐब** भी है। हम बहस करके एक-दूसरे को हराने में लगे हुए हैं। कभी

हिन्दूओं से कभी मुस्लमानों से तो कभी सिक्खों से चर्चा करके उन्हें हराने में लगे हुए हैं। सेवक कहता है कि बुद्धि के बल से हार जीत की चर्चा मेरे मन में रहती है।

मैं अपनी जिंदगी में कई लेक्चरार लोगों को देखता रहा हूँ। वैसे तो वे प्रचार करते हैं कि एक रहें, शांत रहें लेकिन खुद अंदर से ऐसे नहीं होते; वे गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।

मैं कबीर साहब की जीवन की घटना सुनाया करता हूँ कि एक सर्वानन्द पंडित था जिसने हिन्दुस्तान में चर्चा करके हर एक को हराकर अपना नाम सर्वजीत रख लिया था। उसकी माता कबीर साहब की नामलेवा थी। उसने सर्वानन्द से कहा, ''बेटा! पढ़कर तुझे नम्र दिल होना चाहिए था लेकिन तू किस तरफ लग गया है? अगर तू कबीर साहब को हरा दे तो ही मैं तुझे सर्वजीत मानूंगी।''

उस समय गाड़ियों, बसों के साधन नहीं थे। लोग बैलों पर ही सामान लादकर ले जाया करते थे। सर्वजीत बैल पर किताबें लादकर बहस करने के लिए कबीर साहब के घर गया। उस समय कबीर साहब घर पर नहीं थे कमाली घर में थी। सर्वजीत ने कमाली से पूछा, '' क्या कबीर साहब का घर यही है?'' कमाली ने कहाः

कबीर का घर आसमान पे यहाँ सिलहली गैल।
पाँव न टिके पपील दा पंडित लादे बैल।

कमाली ने कहा, ''क्या तू कबीर साहब को इंसान समझता है? वह तो परमात्मा है उनका घर सच्चखंड है, वहाँ तो चींटी भी नहीं चढ़ सकती और तू किताबों के बैल लादकर घूम रहा है।'' इतने में कबीर साहब आ गए। सर्वजीत ने कबीर साहब से कहा, ''मैं आपके साथ शास्त्रार्थ करने के लिए आया हूँ।''

कबीर साहब ने कहा, ''मैंने तो कभी किसी के साथ बहस नहीं की और न ही मैं तेरे जितना पढ़ा-लिखा हूँ।'' सर्वजीत ने कहा, ''फिर

आप लिख दें कि कबीर हार गया है और सर्वजीत जीत गया है।'' कबीर साहब ने कहा कि मैं तो लिखना भी नहीं जानता, तू लिख ले मैं दस्तखत कर दूँगा। उसने लिखा कि सर्वजीत जीत गया और कबीर हार गया।

जब सर्वजीत ने घर जाकर अपनी माता को वह कागज दिखाया तो उसके ऊपर उलट लिखा हुआ था कि सर्वजीत हार गया और कबीर साहब जीत गए हैं। सर्वजीत को बड़ी परेशानी हुई कि शायद मुझसे लिखने में गलती हो गई है। वह फिर कबीर साहब के पास गया। कबीर साहब ने कहा, ''तू लिख ले मैं दस्तखत कर देता हूँ।'' फिर उसने घर आकर देखा तो कागज पर उलट ही लिखा हुआ था।

सर्वजीत ने अपनी गलती नहीं मानी, अपनी माता से कहा, ''मैं लोगों से सुनता था कि कबीर जादूगर है उन्होंने ये सब जादू से किया है वे मेरा लिखा उलट कर देते हैं।'' माता ने कहा, ''बेटा! कबीर साहब कुल मालिक हैं तू उनसे 'नामदान' लेकर अपना जीवन सुधार।'' आखिर सर्वजीत ने कबीर साहब से नामदान प्राप्त किया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तों की चुप ही जीत होती है। चुप रहना भी कौन सा आसान है?'' गुरु नानक जी कहते हैंः

जेता पढ़या तेता कढ़या।

शेखी बहुत प्रीत नहिं अंतर। भोले भक्तन धोख दिया री।।

सेवक कहता है, ''मैं जो बोलता हूँ वह करता नहीं केवल शेखी बघारता हूँ। लोगों को महात्मा बनकर दिखाता हूँ। दिन-रात भोली-भाली आत्माओं को धोखा दे रहा हूँ कि मैं तुम्हें पार कर दूँगा।''

जो डुबन्दे आपसे तारे किन्खें, तरन्दड़ो पी तार नानक पिर स्यों रतया।

कोई तैराक ही हमें तैरना सिखा सकता है। पढ़ा हुआ ही हमें पढ़ा सकता है। जिसने खुद कभी भजन-सिमरन नहीं किया अंदर नहीं गया वह दूसरों को बातें ही सुनाता है।

नर नारी बहुतक बस कीन्हे। मान प्रतिष्ठा भोग किया री।।

हे सतगुरु! मैंने बहुत से नर-नारियों को अपने बस में किया हुआ है। दस प्रचारक भी रख लिए हैं वे मेरी प्रशंसा करने में लगे हुए हैं। मेरे अंदर यह भी **ऐब** हैं कि मैं दुनिया को धोखा देता रहता हूँ। कमाई की चर्चा नहीं, भीड़ इकट्ठी की हुई है। कबीर साहब कहते हैं:

फूटी अँख विवेक दी लिखे न सन्त असन्त।
जिसके संग दस बीस है तिसका नाम महन्त।

महाराज सावन सिंह जी अक्सर ऐसी कहानियाँ सुनाया करते थे कि गायों का झुंड चरने जा रहा था। एक महात्मा भी पास से जा रहे थे। किसी ने कहा, ''देखो महात्मा जी! गायों का कितना बड़ा झुंड जा रहा है।'' महात्मा ने उससे पूछा कि उस झुंड में तेरा क्या है? उस आदमी ने कहा, ''उसमें मेरा तो कुछ नहीं; मेरे ताये का बछड़ा है।'' आमतौर पर हम लोग ऐसा ही कहते हैं कि वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होते हैं।

महाराज सावन कहा करते थे, ''हरिद्वार में कोई पूर्ण महात्मा नहीं लेकिन फिर भी वहाँ बहुत इकट्ठ होता है। सारे मुल्क से रेलगाड़ियाँ हरिद्वार जाती हैं। कुरुक्षेत्र में भी करोड़ो आदमी इकट्ठे होते हैं क्या सबूत है कि वहाँ पूरे सन्त हैं? संगत गुरु को नहीं बना सकती, जहाँ गुरु होता है वहाँ संगत बन जाती है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जहँ सतगुरु तहँ सतसंग बनाई।

एक बार महाराज कृपाल सिंह जी मेरे पिछले आश्रम में चौबारे पर बैठे हुए थे, सामने सड़क पर से भेड़े जा रही थी। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''देख! जैसे भेड़े एक-दूसरे की टाँगों में सिर डालकर चल रही हैं, दुनिया की भी ऐसी ही चाल है अगर एक भेड़ गढ्ढे में गिर जाए या पहाड़ पर चढ़ जाए तो सारी भेड़ें उसी के पीछे चल पड़ती हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''एक बार भेड़ो के बाड़े में आग लग गई। लोग तरस खाकर उन्हें बाहर निकालने लगे लेकिन

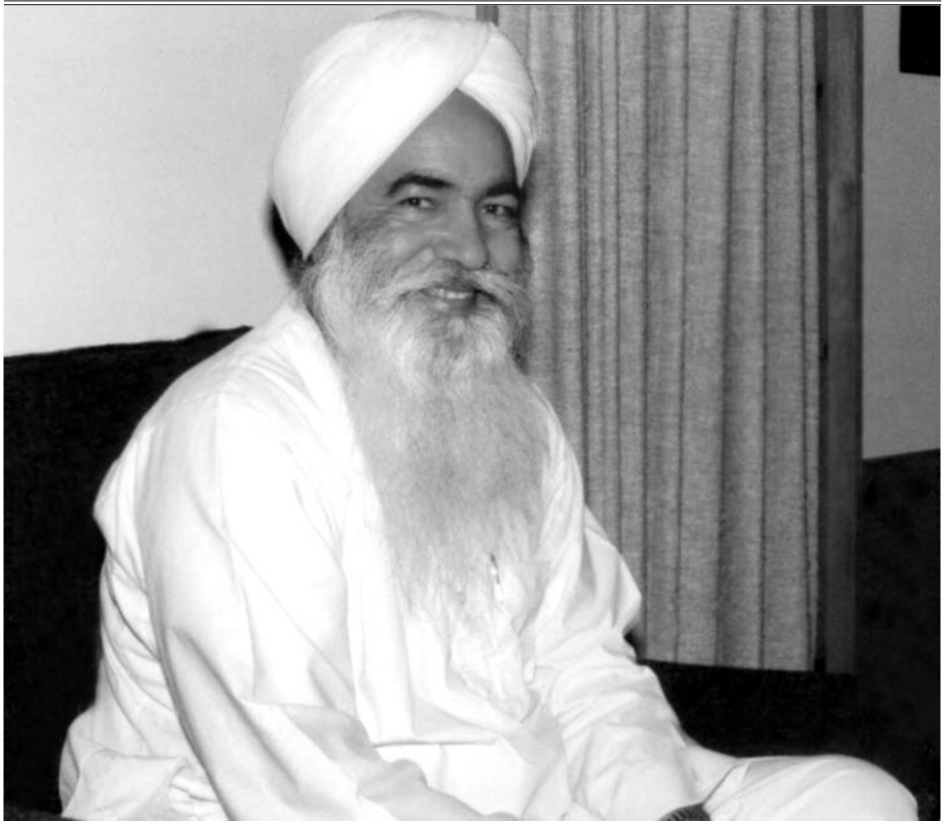

उन्होंने सोसायटी नहीं छोड़ी, अंदर ही जलकर राख हो गई।'' इसी तरह सन्त-महात्मा हमारे ऊपर रहम करते हैं लेकिन हम भी सोसायटी के बंधे हुए उसी तरफ चले जाते हैं।

गुरु संग प्रीत कपट कुछ डर की। कभी थोड़ी कभी बहुत किया री।।

अगर मैंने गुरु से प्रीत की भी है तो वह दिखावे की है अगर थोड़ा-सा भजन भी किया है तो वह भी बीमारी या दुःख के डर से किया है कि कहीं महात्मा गुस्से में आकर मुझे श्राप न दे दें!

कहँ लग औगुन बरनूँ अपने। याद न आवत भूल गया री।।

अब सेवक कहता है, ''हे गुरुदेव! मैं अपने क्या-क्या अवगुण बयान करूं मुझे तो यह भी याद नहीं कि मैंने कितने ऐब किए हैं; ये तो मैंने मोटे-मोटे **ऐब** बताए हैं।''

चोर चुगल इन्द्री रस माता। मतलब की सब बात विचारी।।

हे गुरुदेव! मैं सबसे पहले तेरा चोर हूँ। मैं सोचता हूँ कि मुझे कौन देख रहा है और मुझे चुगली की भी आदत है। मैं अपने मतलब की ही बात करता हूँ। हममें से बहुत से लोगों को तो चुगली का भी ज्ञान नहीं की चुगली किसे कहते हैं?

मैं अपने एक खास दोस्त की मिसाल दिया करता हूँ कि उसे चुगली करने की बहुत आदत थी। उसमें एक-दूसरे को लड़वाने की बहुत बड़ी कला थी। एक दिन मैंने उससे कहा, ''प्यारेया! तू सबको आपस में लड़वा देता है ऐसा क्यों करता है?'' उसने मुझसे कहा, ''नहीं जी! मैं ऐसा नहीं करता, मैं तो केवल बातें ही करता हूँ। वे अपने आप ही लड़ पड़ते हैं।'' आप सोचकर देखें! हम तो यह भी नहीं जानते कि इधर-उधर की बातें करके किसी को लड़वा देना भी चुगली है।

खुद मतलबी निर्दई मानी। बहुतन का अपमान किया री।।

अपने **ऐब** वही आदमी गिनता है जिसके दिल के अंदर खौफ है। वह डरता है कि मुझे इसकी सज़ा मिलेगी। पाप की अवधि तो बहुत छोटी होती है लेकिन सज़ा बड़ी लम्बी होती है। किसी का कत्ल करने में एक मिनट लगता है लेकिन दुनिया में उसकी सज़ा कितनी लम्बी है।

हे सतगुरु! मैं मतलबी भी हूँ। जहाँ मेरा मतलब हल होता है मैं उन लोगों में बैठता हूँ उनकी बात सुनता हूँ लेकिन जब मेरा मतलब निकल जाता है फिर चाहे वे मुझे कुछ भी कहें! मैं परवाह नहीं करता। मैं निर्दयी भी हूँ। ये सब **ऐब** मुझमें हैं।

कोटिन पाप किये बहुतेरे। कहूं कहाँ लग वार न पारी।।

हे गुरुदेव! मैं क्या कहूँ? मैंने तो करोड़ों ही **ऐब** किए हैं अगर कोई अच्छा काम किया हो तो मैं तेरे आगे आकर सच्चा बनूँ कि मैंने यह अच्छा काम किया है। मैं तो पैर से लेकर सिर की चोटी तक ऐबों से भरा हुआ हूँ। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जेते नीर समुद्र भरया तेते अवगुण हमारे।
दया करो कुछ मेहर उपाओ डुबदे पत्थर तारे।

समुद्र के सारे पानी को एक तरफ रखकर तोला जाए तो भी मेरे अवगुण भारी हैं। हे सतगुरु! तू मुझ पर दया-मेहर कर तूने तो पत्थर दिलों को भी तार दिया है।

भाई गुरदास जी ने भी कहा है, ''जिस पेड़ के नीचे सन्त बैठ जाते हैं वह पेड़ भी ख़ुश हो जाता है। एक ऐसा समय भी आ जाता है कि लोग उस पेड़ की पूजा करने लग जाते हैं अगर कोई प्रेत भी उनकी शरण में आता है तो वह तर जाता है। कौडे राक्षस जैसे बड़े-बड़े राक्षस भी सन्त की शरण में आकर महात्मा बन जाते हैं।''

बन्दा क्यों न तरे जो शरण चल आवंदा।

आप कहते हैं कि बन्दा क्यों नहीं तरेगा? अगर हम एक सतसंग में एक-एक ऐब छोड़ेंगे तो कितने ही **ऐब** धीरे-धीरे छूट जाऐंगे।

हे सतगुरु अब दया विचारो। क्या मुख ले मैं करूँ पुकारी।।

अब शिष्य कहता है, ''हे सतगुरु! मेरा तो वह मुँह ही नहीं है क्योंकि मुँह भी तभी पवित्र होता है जब हम अपनी रसना से नाम जपेंगे। अब तू ही दया कर मेहर कर।''

नहिं परतीत प्रीत नहिं रंचत। कस कस मेरा करो उबारी।।

हे सतगुरु! मैं देखा देखी सतसंग में आता हूँ; न मेरे अंदर तेरी प्रतीत है और न ही प्रीत है। उद्धार करने वाली दो ही चीजें है - जिसके अंदर प्रीत है उसके अंदर प्रतीत भी अपने आप आ जाती है, जिसके अंदर प्रीत नहीं उसके अंदर प्रतीत भी नहीं होती।

मो सा कुटिल और नहिं रंचक। कस कस मेरा करो उबारी।।

हे सतगुरु! मेरे जैसा कोई **ऐबी** कुटिल नहीं। तू मुझे सुधार, मुझ पर कृपा कर अगर दो आदमी कह दें कि यह महात्मा बहुत अच्छा है

तो हम उस तरफ झुक जाते हैं अगर दस आदमी यह कह दें कि यह पाखण्ड बनाकर बैठा है तो हम वहाँ निन्दा करने लग जाते हैं। आप सोचकर देखें! हमारा उद्धार कैसे होगा, परमात्मा हमारी कौन-सी चीज़ देखेगा? जिन्हें प्रीत होती है उन्हें प्रतीत भी आ जाती है।

गुरु तेग बहादुर साहब के साथ उनके पाँच सेवक थे। उस समय हिन्दुस्तान के हालात ऐसे थे कि दुनियावी धर्म के लोगों को बहुत दुख सहना पड़ता था। कुछ पंडितों ने गुरु तेग बहादुर के पास आकर कहा कि आप अपना दीन(धर्म) छोड़ दें तो हम आपकी शरण में आ जाएंगे। इतिहास में आता है कि औरंगजेब ने उस समय तीन शर्तें रखी-अपना दीन छोड़े, करामात दिखाएं या अपना सिर कलम करवाएं।

गुरु तेग बहादुर साहब ने कहा, ''यह तो परमात्मा को मंजूर था कि उसने मुझे जिस धर्म में जन्म दिया, यह हमारे हाथ में नहीं। परमात्मा ने जिस धर्म में पैदा किया है एक मामूली जीवन के लिए उस धर्म को छोड़ना बुजदिली की बात है।'' आप कहते हैं:

भय काहू को देत, न भय मानत आन।

मालिक के प्यारे न किसी को भय देते हैं और न खुद भय मानते हैं। करामात करना अच्छा नहीं क्योंकि परमात्मा ने कभी किसी को अपना शरीक नहीं बनाया। सन्त-महात्मा परमात्मा के शरीक नहीं बनते उसके प्यारे बेटे बनते हैं। औरंगजेब के दिल में ख्याल आया कि इनके साथ जो शिष्य हैं उन्हें कष्ट दिए जाएं शायद यह डर जाएगा!

भाई मतिदास और भाई दयाले को उबलती देग में उबाल दिया गया और कहा अगर तुम्हारे गुरु में कोई करामात है तो वह तुम्हें बचाए। भाई मतिदास ने कहा कि मेरा गुरु कुल मालिक है, परमात्मा है मैं इसे छोड़कर कहाँ जाऊँ? इसका नाम प्रतीत है। शिष्यों ने कहा कि करामात कहर है। हमारे गुरु में जो करामात है वह हम ही जानते हैं। गुरु की करामात सेवक की संभाल करनी है। आपके सामने ही भाई मतिदास को आरे के साथ चीर दिया।

तीसरी शर्त सिर कलम करवाने की है। गुरु तेगबहादुर साहब ने कहा, ''सिर हाजिर है इसने तो एक दिन जाना ही है।'' गुरु गोविंद सिंह जी ने लिखा है :

ठीकर फोड़ दलीज पर पढ़-पढ़ कियो ब्यान।
तेग बहादुर सी क्रिया करी न किन्हूं आन।

गुरु तेग बहादुर जैसी क्रिया किसी ने नहीं की। आप अपनी जिंदगी का ठीकरा उस समय की हुकूमत औरंगजेब के सिर पर फोड़ गए।

जतन करूं तो बन नहिं आवत। हार हार अब सरन पड़ा री।।

सेवक कहता है मेरे यत्न से कुछ नहीं हो सकता। मैं थककर, चूर होकर तेरी शरण में आ गया हूँ। शरण लेनी बड़ी मुश्किल है।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे कि भजन करना तो आसान है लेकिन शरण लेनी बड़ी मुश्किल है। शरण ली गुरु अंगददेव ने, गुरु अमरदेव ने। आप एक बार गुरु की शरण में आए वापिस घर नहीं गए।

एक दिन गुरु अंगददेव जी गुरु नानकदेव जी के साथ चले जा रहे थे उनकी बाजू गुरु नानकदेव जी से आगे निकल गई। गुरु अंगददेव ने एक साल अपनी बाजू को अपने जिस्म से बाँधकर रखा कि तू गुरु से आगे निकलती है। शरण लेनी बड़ी ही मुश्किल है। जब झखड़ आता है तो बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं। इसी तरह जब कष्ट आता है उस समय पास होना बहुत मुश्किल है।

शरण ली महाराज सावन सिंह जी ने, महाराज कृपाल ने। आप जानते हैं कि यह मौत-पैदाईश का संसार है। महाराज सावन सिंह का 31-32 साल का जवान लड़का ओवरसियर लगा हुआ था। आपने ब्यास स्टेशन पर अपने बच्चे के श्वांस पूरे करवाए। आपने सोचा! अगर मैं इसे डेरे लेकर गया तो बीबी रुक्को बाबा जयमल सिंह जी से कहेगी कि इसकी जिंदगी बढ़ाएं; इससे मेरी गुरुमुखता में फर्क पड़ेगा।

आप कहते हैं कि जब लड़के ने श्वांस पूरे किए तो मैंने अपने दिल को टटोलकर देखा, उसमें न तो कोई गम था न कोई खुशी थी। यह सब बाबा जयमल सिंह जी की कृपा थी। आप सोचकर देखें! जवान लड़के की मौत को स्वीकार करना कोई मामूली बात नहीं क्योंकि उन्होंने गुरु की शरण ली हुई थी। ***सुख दुख ओही ध्याईए।***

महाराज कृपाल सिंह जी की जिंदगी में भी ऐसा ही हुआ। जब आपका लड़का शरीर छोड़ गया तो आप उसे खुशी-खुशी शमशान भूमि में लेकर गए। आपको भी न कोई खुशी थी और न कोई गम था। आपकी ऐसी हालत देखकर राजा राम सरार्फ जोकि आर्य समाज का प्रेसिडेन्ट था महाराज सावन सिंह जी की शरण में आया और आपका सच्चा-सुच्चा सेवक बना। उसने देखा! यह किसी पूरे गुरु का शिष्य है। इसके ऊपर दुनिया की गमी-खुशी का कोई असर नहीं।

प्यारेयो! हम सब बातें तो कर लेते हैं लेकिन जिन्होंने शरण ली होती है वे गिनती के थोड़े ही होते हैं क्योंकि जिंदगी में दुख भी आता है और सुख भी आता है। जिंदगी में कई ऐसे दुख भी आते हैं जो इंसान को हिलाकर रख देते हैं।

जग में उत्तम कड्डिए विरले केई के।

यह भी बात कही मैं मुँह से। मन से सरना कठिन भया री।।

सेवक कहता है, ''हे सतगुरु! मैं मुँह से कहता हूँ कि मैंने शरण ली है लेकिन मेरा मन फिर भी नहीं मान रहा।''

सरना लेना यह भी कहना। झूठ हुआ मुँह का कहना री।
तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो। जस तस मेरा करो उबारी।।

सेवक जब अपनी कमजोरी देखता है उस समय ही गुरु के आगे पुकार करता है कि हे सतगुरु! मैं जैसा भी हूँ तू ही मुझे सुधार सकता है। तू ही मुझे ले जा सकता है। तू ही मेरे **ऐबों** को माफ कर सकता है। तू ही कमाई करवा सकता है। जो कुछ है सब कुछ तू ही है।

मैं तो नीच निपट संशय रत। लगे न चरनन प्रीत करारी।।

मैं तो नीच हूँ , कपटी हूँ तू मुझे अपने चरणों से लगाए रख। मैं अपने आप तेरे चरणों से नहीं लग सकता। तू ही दया कर।

मेरे रोग असाध भरे हैं। तुम बिन को अस करे दवा री।।

रोग की दवाई होती है लेकिन असाध रोग की कोई दवाई नहीं होती इसलिए सेवक कहता है मेरे तो असाध रोग हैं लेकिन तू वैद्य है। आप भजनों में पढ़ते हैंः

सानूं जन्म मरण का दुख वे बन वैद्य रोग नू चुक वे।

हमें जन्म और मौत का बहुत दुख है। बीबियाँ जानती ही है कि पैदाईश के समय बच्चे की क्या हालत होती है? हम सब जानते हैं कि मौत के समय कितनी पीड़ा होती है। मौत बच्चे, बूढ़े और जवान का लिहाज़ नहीं करती और न ही किसी बड़े औहदे वाले या किसी बड़े नेता का लिहाज़ करती है। मौत की दुखदाई घड़ी का पता नहीं कि हमें किस तरह इसका सामना करना पड़ेगा। ऋषि-मुनियों ने भी अगर भजन किया तो इसी कष्ट के डर से ही किया है। हिन्दू शास्त्रों में आता है और तुलसी साहब भी कहते हैंः

मृत्यु के समय पीड़ा होत अपार, बिच्छु इक हजार दा ते डंक लगे इक वार।

जब चाहो जब छिन में टारो। मेहर दया की मौज निरारी।।

हे सतगुरु! तेरी दया-मेहर की मौज बड़ी निराली है अगर तू कृपा करे तो हमें एक क्षण में बख्श सकता है और बख्शता भी है।

पिछले अवगुण बख्श दे प्रभ अग्गे मार्ग पावे।

सन्त हमेशा यही कहते हैं कि जो अवगुण पहले कर लिए हैं अब वहीं खड़े हो जाएं और आगे के लिए तौबा कर लें।

बारम्बार करूँ मैं बिनती। और प्रार्थना करूं तुम्हारी।।

मैं श्वांस-श्वांस के साथ विनती और प्रार्थना करता हूँ। असल में सेवक की प्रार्थना तभी होती है जब वह भजन पर बैठता है, अभ्यास पर बैठकर हम प्रार्थना ही कर रहे होते हैं। यह प्रार्थना नहीं कि बीस-पच्चीस आदमी इकट्ठे होकर जोर-जोर से शब्दों को उचारें, शब्द कभी आगे-पीछे भी हो जाते हैं और कभी साज़ों की आवाज़ सही नहीं निकलती।

मैं बताया करता हूँ कि जब मैं घाना गया। वहाँ के प्रेमियों ने एक मंदिर में सतसंग रखा। वहाँ उन्होंने आरती की मैंने अपनी जिंदगी में पहले ऐसी आरती नहीं देखी थी। वहाँ के लोग जमीन से इतनी ऊपर उछल रहे थे जैसे उनके नीचे स्प्रिंग लगे हुए थे; हर एक ने हाथ में माईक पकड़ा हुआ था।

बलवन्त से तो वहाँ बैठा ही नहीं गया, वह हँसकर बाहर चली गई। बाद में जब मुझे बोलने का मौका मिला तो मैंने यही कहा कि मैं आप लोगों का यह जोश देखकर बहुत खुश हूँ अगर यही जोश अंदर ज्योत को प्राप्त करने में लगाया जाए तो आपको बहुत फायदा हो सकता है। वही प्रार्थना मंजूर होती है जहाँ हमारा ख्याल टिक जाए। वहाँ सिर्फ गुरु और सेवक होता है। उस प्रार्थना में जीभ नहीं हिलती, होंठ नहीं फड़कते; आँख भी नहीं झपकती। इसी का नाम प्रार्थना है।

तुम बिन और न कोई दीखे। तुमहीं हो मेरे रखवारी।।

हे सतगुरु! तू मेरा रखवाला है, तेरे बिना मेरा और कौन है?

बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूँ। जैसा तैसा आन पड़ा री।।

अब सेवक कहता है, ‘‘हे सतगुरु! मैं बुरा हूँ। बुरों से भी बुरा हूँ लेकिन तेरी शरण में आया हूँ। जब हम सच्चे दिल से प्रार्थना करते हैं तो वह जरूर सुनता है। गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा है, ‘‘वह हाथी की फरियाद बाद में चींटी की फरियाद पहले सुनता है।’’

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ‘‘अब मेरा नाम तेरा चेला पड़ गया है अगर तेरा चेला नर्क को जाएगा तो क्या तुझे लाज नहीं आएगी?’’

अब तो लाज तुम्हें है मेरी। राधास्वामी खेवो बला री।।

इस शब्द में सेवक सच्चे दिल से अपने गुरु के आगे खड़ा होकर नम्रता से प्रार्थना करता है। सेवक एक-एक करके अपने अवगुण वर्णन करता है कि हे सतगुरु! मैंने इतने **ऐब** किए हैं। मैं अब तेरी शरण में आया हूँ अब तो तुझे ही लाज है तू मुझे रख ले! मुझे बख्श दे!

हमें चाहिए कि हम सच्चे दिल से प्रभु रूप कृपाल के आगे अरदास करें कि हे परमात्मा सावन-कृपाल! तू हमें बख्श ले। हम तेरी शरण में हैं अगर हम सच्चे दिल से प्रार्थना करते हैं तो उस बख्शनवाले का घर बंद नहीं होता; उसकी दया का दरवाजा हमेशा ही खुला रहता है।

महाराज सावन ने पैन्तालिस साल होका दिया कि ले लो। आखिर कहा मैं बूढ़ा हो गया हूँ हो सकता है तुम्हारा हमारा आखिरी मेल हो इसलिए तुम ले लो लेकिन हममें से लेने वाले कितने निकलते हैं?

महाराज जी ने पच्चीस साल यही होका दिया कि बख्शनवाले का क्या कसूर है वह तो सच्चखंड से देने के लिए ही आया है।

मैं बताया करता हूँ कि प्यारेयो! जैसा हमारा बर्तन था उन्होंने वैसा डाला। हम जैसा बर्तन अब बनाएंगे वैसा ही हमारे गुरुदेव हमारे बर्तन में डालेंगे। जब सन्त ऐसे लफ्ज बोलते हैं तो हम उनसे दुनिया ही माँगते हैं। कोई कहता है, ''मेरी बीमारी दूर हो जाए।'' कोई कहता हैं, ''मेरा यह दुख दूर हो जाए।'' कोई दुनिया का कुछ सामान माँगता है तो कोई कुछ और माँगता है लेकिन हम जितनी भी चीज़ें माँगते हैं उनमें कष्ट ही कष्ट निकलते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मँगना सिर दुखा दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।

हमें चाहिए अपना भजन-सिमरन करें। स्वामी जी महाराज के शब्द पर अमल करें। हमें इंसानी जामा मिला है इस समय से फायदा उठाएं, अपने जीवन को पवित्र बनाए। ❁❁❁

सवाल-जवाब

एक प्रेमी *: उस दिन हमने देखा कि आप गुरुमेल और सुखपाल के साथ दीवार के साथ-साथ सैर कर रहे थे, थोड़ी देर के लिए हम भी आपके पीछे हो गए लेकिन बाद में आपने हमें रोक दिया। इससे पहले यहाँ के कार्यक्रम में यह भी शामिल था कि आप हमें सैर करवाने के लिए अपने साथ ले जाया करते थे लेकिन अब यह बंद हो गया है। सब सुखों के दाता! क्या आप इसके बारे में हमें कुछ बताना चाहेंगे कि आपने यह कार्यक्रम क्यों बंद कर दिया?*

बाबा जी : हाँ भई! उस जगह (77 आर.बी.) का माहौल ऐसा ही था, वहाँ अपने पास इस तरह की ज्यादा जगह नहीं थी कि हर सतसंगी अपने आप खुले घूम सकते। वहाँ अपनी जमीन के दोनों तरफ के बीच में से रास्ता जाता था इसलिए मैं आप लोगों को बाहर सैर करवाने ले जाया करता था यहाँ काफी जगह है, हर प्रेमी अकेला टहल सकता है।

मेरा ख्याल है आपको याद होगा कि पहले यहाँ कच्ची दीवार थी। यह दीवार उस समय बनाई थी जब मैं यहाँ अभ्यास करता था ताकि बाहर से कोई आदमी आकर मुझे परेशान न करे। जब मैं अंदर बैठकर थक जाता था तो इस दीवार के साथ थोड़ा सा घूम लेता था। उस दिन मैंने आपको अपने साथ टहलने से इसलिए रोका था अगर मैं आपको न रोकता तो सारी संगत ही पीछे आ जाती। प्रेमियों की बीजी हुई फसल खराब हो जाती, जिससे इनका नुकसान हो जाता।

***एक प्रेमी** : ईसा मसीह के बारे में दिल दहला देने वाली बात यह है कि उन्होंने आखिरी समय में बहुत दुख उठाए। जब उन्हें सूली पर चढ़ाया जा रहा था वह उस समय उदासी की हालत में पुकार कर रहे थे, ''हे परमात्मा! तूने मुझे क्यों बिसार दिया?'' क्या आप भी जब हमारे कर्मों का भुगतान करते हैं तो दुखी होकर आपने भी परमात्मा से यही पुकार की हो कि हे परमात्मा! तूने हमें क्यों बिसार दिया?*

बाबा जी : इतिहास बाद में लिखे जाते हैं लिखने वाले से कोई भूल भी हो सकती है। महाराज सावन सिंह जी आमतौर पर अपने सतसंगों में पिछले सन्तों का इतिहास बताया करते थे। ईसा मसीह, कबीर साहब और गुरु अर्जुनदेव जी के साथ क्या हुआ? मौलाना रूम और शम्स तबरेज़ की खाल उतारी गई। आप यह भी बताया करते थे अगर हिन्दुस्तान में अंग्रेजों का राज्य न होता तो हम भी परखे जाते। आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि सन्तों के लिए काल कोई रियायत नहीं करता कर्मों का भुगतान सेवक करे! चाहे गुरु करे! कर्मों के बोझ को हल्का करने के लिए काल जो चाहे ले सकता है। सूली पर चढ़ाए! आँख ले या शरीर को कोई नुकसान पहुँचाए?

सन्त अपने बच्चों के लिए परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं लेकिन जो लोग उन्हें दुखी कर रहे होते हैं या सूली पर चढ़ा रहे होते हैं वे उनके लिए भी परमात्मा से यही कहते हैं कि तू इनके ऊपर मेहर कर क्योंकि ये लोग बहुत बुरा कर्म बना रहें हैं; जब ये इन कर्मों का भुगतान करेंगे तो इन्हें बहुत तकलीफ होगी। ऐसा नहीं हो सकता कि

वे परमात्मा को ललकार कर कहें कि तूने हमें बिसार दिया है। परमात्मा उनके अंदर काम कर रहा होता है, परमात्मा उनसे अलग नहीं होता। सन्तों का अपना कोई कर्म नहीं होता। उन्हें जो भी दुख-तकलीफ आती है वह उनके शिष्यों का ही बोझ होता है। कई बार ऐसा होता है कि उन्होंने जिसका कर्म उठाया होता है वही अभाव ले आता है।

सन् 1984 में हिन्दुस्तान में लोगों ने हैवानियत धारण कर ली थी। रहम और प्यार लोगों के दिलों से निकल गया था। कुछ लोग एक खास कौम को बड़ी बेरहमी से कत्ल कर रहेथे। जिस तरीके से कत्ल किया जा रहा था वह बताने को भी दिल नहीं करता। उस समय यह भजन जरूर बोला थाः ***होया सुख ओले कौन दुख फोले, आ सुण कृपाल प्यारेया।***

गुरु नानकदेव जी के समय में मुगलों ने ऐमनाबाद पर बहुत जुल्म किया। किसी भी औरत की इज्जत सुरक्षित नहीं थी किसी भी बच्चे की जान सुरक्षित नहीं थी। बहुत कत्लोगारत हुआ। उस समय गुरु नानकदेव जी ने परमात्मा को सम्बोधित करते हुए यही कहाः

ऐह भी मार पए कुरलाने, तैं की दर्द न आया।

हे परमात्मा! ये सारे तेरे ही जीव है; तू इनके दिल में दर्द और प्यार पैदा कर। उस समय बाबर ने गुरु नानकदेव जी को भी कैद कर लिया। कैद में सबसे चक्की पिसवाई जाती थी। गुरु नानकदेव जी से भी चक्की पिसवाई गई। आपने मालिक का ध्यान नहीं छोड़ा और अपने आसपास के लोगों से भी यही कहा कि हमने सुख-दुख में परमात्मा को ही याद करना हैः ***दुख सुख ऐहो ध्याईए।***

ईसा-मसीह को परमात्मा से अलग समझना गलती है। वह जो चाहे कर सकते थे। परमात्मा ने सन्तों के अंदर निवास किया होता है। देखने में सन्त बहुत ही साधारण नजर आते हैं अगर हम उनकी प्रशंसा करें कि आप परमात्मा हैं, रहीम हैं तब भी वे यही कहते हैं कि हमारे अंदर कोई गुण नहीं। हम तो छोटे जीव हैं, पापी जीव है। ये सब सिफतें तो हमारे गुरु में हैं। वे अपने गुरु को ही मुख्य समझते हैं। ❋❋❋

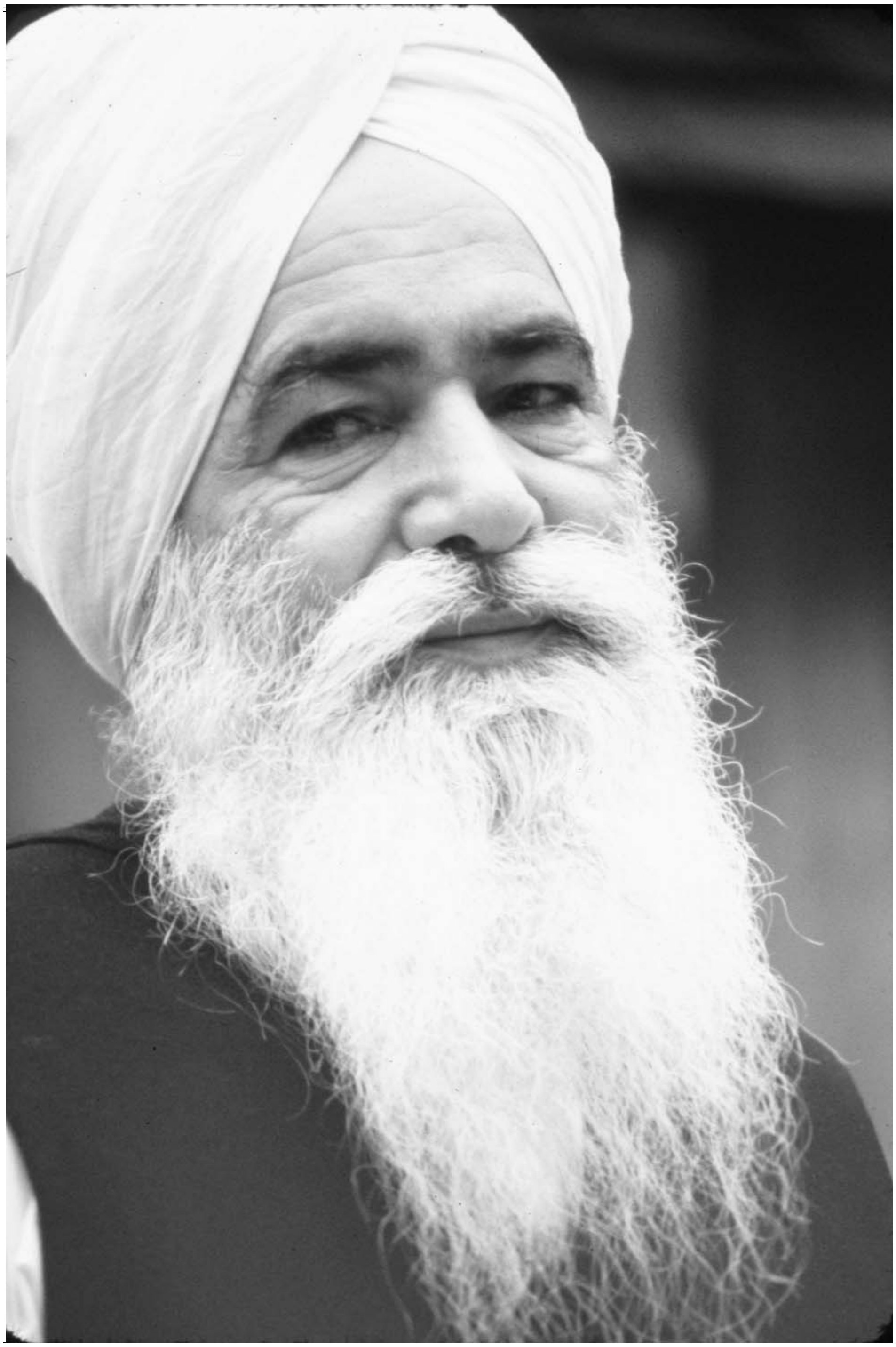

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से अनमोल वचन

प्रेम-विरह

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

पिछले अंक से जारी.....

जहादों की नमाज सजदे करने से अदा होती है और आशिकों की नमाज इसे भूल जाने में होती है। जहादों का वजू हाथ, पैर और मुँह धोकर होता है क्योंकि शरीयत में वजू के बिना नमाज जायज नहीं गिनी जाती लेकिन प्रेमियों का वजू दुनिया की तरफ से हाथ धोना है। जब तक तू दुनिया की तरफ से हाथ न धो ले मालिक को याद न कर।

प्रेमी सतगुरु स्वरूप के रंग में सदा खिले रहते हैं। गुरु अमरदास जी फरमाते हैं कि बसंत ऋतु में जंगल भी खिल उठते हैं इसी तरह जो जीव हरि के साथ चित्त लगाते हैं वे महक उठते हैं, उनका मन हरा हो जाता है। वे दिन-रात हरि का नाम जपकर अपनी हौमें धो देते हैं।

वसंत चढ़या फूली वनराय ऐजी जंत फूले हर चित लाए।
इन बिध ऐहो मन हरया होए।
हर नाम जपे दिन राती गुरुमुख हौमें कंडा धोए।

आप फरमाते हैं, ''यह मन सतगुरु के रंग में रंगा रहता है और सदा खिला रहता है फिर इसे दुख कहाँ?''

वनस्पति मोली चढ़या बसन्त ऐह मन मोलया सतगुरु संग।
तुम साच ध्यावो मुग्धमना तां सुख पावो मेरे मना।

मालिक के **प्रेम** की यह कसौटी है कि ऐसे पुरुषों के पास से अगर दुनिया की कोई चीज चली जाती है तो उन्हें उसका कोई अफसोस नहीं होता अगर भजन-बंदगी की कोई घड़ी याद के बिना गुजर जाए तो उन्हें उस घड़ी का सख्त दुख होता है।

मालिक से मौहब्बत की यही निशानी है कि वह उसके भजन का ऐसा ख्वाहिशमंद रहता है जैसे प्यासा पानी के लिए होता है। न जुबान

थके न दिल खाली रहे क्योंकि उसे जिसकी मौहब्बत होती है वह उसे हरदम याद रखता है। उसका जिक्र हरदम दिल के अंदर रहता है।

एक पल खिन्न विसरे तू स्वामी जानो बरस पचासा।

मालिक के प्यारों के दिल में मौहब्बत होती है। उन्हें मालिक के दर पर जाने वाली खलकत के साथ भी प्यार होता है। ऐसी प्रेमी सखियों से अगर आप मालिक की कोई निशानी पूछें तो वह उसके **प्रेम** के रस में गद्‌गद्‌ होकर कुछ बोल नहीं सकती, उनका गला रूक जाता हैः

मिल सखियां पूछे कहो कंत निशानी।
रस प्रेम भरी कुछ बोल न जानी।

प्रेम एक आलमगीर जज्बा है। प्रेम की शक्ति से मौहब्बत पैदा होती है। जिंदगी के फूल में मौहब्बत के रस की सुगंधी है। जब मन में प्रीत का वेग उठता है तो स्वाभाविक ही किसी न किसी वस्तु के साथ मन की लगन लग जाती है। **प्रेम** का जज्बा सारे जहान में काम कर रहा है। गाय की तरफ देखें! किस जोश के साथ अपने बच्चे को चाटती है। सभी पशु और पक्षी आपस में प्रेम करते हैं। भँवरा रोशनी के चारो तरफ परिक्रमा करता है। मछली पानी से बिछड़कर तड़फ उठती है। हिरन जंगल में घंटे की आवाज सुनकर घायल हो जाता है। साँप बीन की आवाज पर मस्त हो जाता है। चकवी सूरज की तरफ टिकटिकी लगाकर देखती है।

प्रेम का जज्बा हैवानों, पक्षियों, कीड़ों और तिनके-तिनके के अंदर मौजूद है। इंसान को भी प्रेम की झलक ने दीवाना बना रखा है। सारी दुनिया में इस प्रीत का चर्चा है। कौन सा दिल है जो मौहब्बत से खाली है? प्रीत का हिस्सा लेकर ही इंसान दुनिया में पैदा होता है प्रीत के ही सहारे जीता है और इसका ठीक इस्तेमाल न करने के कारण इसी में गर्क होता नजर आता है।

प्रेम इंसान की कुदरती ख्वाहिश है। मालिक प्रेम है और रूह मालिक की अंश है इसलिए मालिक की सिफत उसमें कुदरती तौर पर

मौजूद है। मालिक ने इस दुनिया और मनुष्य के अंदर प्रेम का जज्बा पैदा किया है इसी प्रेम के कारण यह दुनिया कायम है। इंसान दुनिया की मौहब्बत की तरफ खिंचा रहता है अगर **प्रेम** न रहे तो न दुनिया कायम रह सकती है और न दुनिया वाले ही कायम रह सकते हैं।

जहाँ **प्रेम** रहता है वहाँ जीवन की धारा चलती रहती है। जीवन के सब स्वाद बने रहते हैं अगर जहान में प्रेम न होता तो जीवन का कोई रस न होता। प्रेम हर दिल को प्रफुल्लित और चढ़ती कला में रखता है। वह इंसान कहलवाने के काबिल नहीं जिसके अंदर किसी किस्म की मौहब्बत न हो क्योंकि यह जरूरी है कि उसका कोई न कोई महबूब हो। यह कुदरती जज्बा हर एक के अंदर मौजूद है कोई इस संसार की मौहब्बत में फँसा हुआ है; कोई परलोक के सामान का पुजारी बना हुआ है और किसी ने मालिक की मौहब्बत का पल्ला पकड़ा हुआ है।

दुनिया की मौहब्बत नाशवान है। परलोक की मौहब्बत वाले इससे अच्छे हैं लेकिन ऊँची और सच्ची मौहब्बत उस मालिक की है। असल में वही इंसान है जिसके अंदर मौहब्बत का खमीर है, यही इंसान को पहचानने की कसौटी है। जिसके अंदर जितना **प्रेम** का जौहर है वह उतना ही इंसान कहलवाने का हकदार है। हर चीज अपनी सिफतों की वजह से मशहूर होती है, जिस तरह आग उस समय तक आग है जब तक उसमें तपिश है; हर एक चमकने वाली धातु सोना नहीं होती।

खालस इंसान वही है जिसके अंदर **प्रेम** की झलकती तस्वीर है। ऐश-ईशरत के सामान इकट्ठे कर लेने से इंसान नहीं बन सकता, वही इंसान है जिसके अंदर मनुष्य मात्र के लिए दर्द भरा दिल है जो किसी की तकलीफ देखकर मोम की तरह पिघल जाए और किसी के गम को देखकर अपने गम को भूल जाए; उसके दिल में प्रेम का जज्बा है।

कबीर साहब फरमाते हैं कि जिस इंसान के अंदर प्रेम का मादा नहीं उसे चलता फिरता कब्रिस्तान समझें। ऐसा इंसान लुहार की धौंकनी की तरह है जो बेजान होती हुई भी साँस लेती नजर आती है।

जां घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की सांस लेत बिन प्रान।

आप फरमाते हैं कि जिस इंसान के अंदर नम्रता, मालिक की बंदगी और सबके लिए आदर है उसके अंदर मौहब्बत और **प्रेम** ठाठें मार रहा है। वह मालिक के प्रेम और रसरंग का उभर-उभरकर गिरने वाला प्याला बना हुआ है। वह सील स्वभाव के गुण से भरपूर है; ऐसा इंसान निसंदेह सबसे बड़ा है।

दीन गरीबी बंदगी सबसे आदरभाव।
कहे कबीर तेई बड़ा जामें बड़ा स्वभाव।

इंसान की मान-बड़ाई विद्या की डिग्रियां लेने या बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ लेने में नहीं है। हजरत मौहम्मद साहब ऊमी थे लेकिन दुनिया का एक बड़ा हिस्सा उनकी इज्जत करता है। राम कृष्ण परमहंस किताबी इल्म के जानकार नहीं थे पर बंगाल में सबके अंदर उनके लिए आदर और मान है। गुरु नानक साहब और कबीर साहब ने किसी यूनिवर्सिटी से इल्म हासिल नहीं किया लेकिन बहुत से हृदयों में उनका सम्मान है। उन्हें इस इज्जत का हकदार बनाने वाला उनका मालिक और मनुष्य जाति का अटूट प्यार था। वे प्रेममयी मालिक के रंग में रंगे हुए थे। इल्म किताबों का बच्चा है लेकिन **प्रेम** किताबों की माँ है।

आमतौर पर देखने में आता है कि जब हम किसी अच्छे गुण के बारे में सुनते हैं तो हमारे अंदर उसे प्राप्त करने की चाह पैदा होती है। जब हम किसी के पास बैठते हैं तो उसके साथ ताल्लुक बन जाता है जिससे दिल को सुख सा प्रतीत होता है, उसे बार-बार देखने और उसके पास बैठने को दिल करता है।

कुछ भाव जैसा बन जाता है। भाव शक्ति से मौहब्बत पैदा हो जाती है। जिंदगी के फूल के अंदर मौहब्बत के रस की सुगंधी है। जब यह सांझ पक्की हो जाए तो मौहब्बत पैदा हो जाती है। दिल की ऐसी अवस्था बन जाती है कि उससे अलग होने का दिल नहीं करता। यह अवस्था

यहाँ तक दृढ हो जाती है कि अक्ल कुछ भी कहे तो भी दिल बेख्तियार होकर नहीं सुनता।

प्रीतम की नजदीकी के बिना दिल को चैन नहीं आता। हर पल दिल उसकी तरफ ही खिंचता है और उससे मिलने के लिए तड़फता है। यह जज्बा दिनों-दिन बढ़ता जाता है आखिर प्रेम की शक्ल अख्तियार कर लेता है। इस जज्बे में प्रेमी अपने आपको भूलने लगता है, उसे तन की भी खबर नहीं रहती।

प्रीतम है तो जिंदगी है नहीं तो मौत। प्रेमी अपने पराए सबसे लापरवाह हो जाता है। रही-सही अक्ल दूर हो जाती है। प्रेमी प्रीतम के दो कमल नैनों की शराब पीकर मस्त हो जाता है। उसे लोकलाज का ख्याल नहीं रहता। अक्ल और होश से बिल्कुल ही छुट्टी हो जाती है।

भगवान कृष्ण जी फरमाते हैं, ''प्रेम वह पाक जज्बा है जो इंसान के दिल में उस वक्त पूरी तरह साक्षात होता है जब खुदी, खुदगर्जी काम और तंगदिली का पर्दा फट जाता है।'' ये वे सीढ़ियाँ हैं जो साधक को **प्रेम** तक पहुँचने के लिए चढ़नी पड़ती हैं लेकिन कहीं-कहीं देखने में आता है कि कामिल मुर्शिद के साथ आँखें चार होने से ही उसके अंदर ईश्क की लहर प्रवेश कर जाती है। मौहब्बत के जज्बे का दर्जा लाँघने के बिना ही **प्रेम** का दर्जा मिल जाता है। भाई नंदलाल जी फरमाते हैंः

एक दृश्य तारे गुरु पूरा।

गुरु साहब फरमाते हैं कि जाति से सिफत पैदा होती है। सिफत का नतीजा कर्म होता है। कर्म से उसका असर होता है जिसके अनुसार मौहब्बत भी चार तरह की होती है।

पहले किस्म की मौहब्बत - किसी के साथ किसी असर के कारण है। जब तक वह असर रहता है मौहब्बत बनी रहती है। जिस तरह कोई बिजली की बैटरी को अपने जिस्म के साथ लगाए रखता है वह बैटरी उसके जिस्म को गर्म रखती है लेकिन जब बैटरी काम नहीं करती तो

वह उसे हटा देता है जिससे यह जाहिर होता है कि उसे बैटरी के साथ नहीं उसके असर के साथ प्यार था।

एक आदमी सुंदर लिखता है। कोई आदमी उसके साथ उसकी सुंदर लिखाई के लिए प्यार करता है क्योंकि उसने उस आदमी से कोई सुंदर किताब लिखवानी है। जब किताब लिखवाई गई उसका मतलब पूरा हो गया तब मौहब्बत न रही। इससे साफ जाहिर होता है कि उसकी मौहब्बत अपनी गर्ज के लिए ही थी। दुनिया में आम मौहब्बतें मतलब न होने पर खत्म हो जाती हैं।

दूसरे किस्म की मौहब्बत - एक आदमी अपनी स्त्री के साथ इसलिए **प्रेम** करता है क्योंकि उसमें काम चेष्टा प्रबल है स्त्री उसकी पूर्ति का सामान है। जब वह स्त्री उस काम के लायक नहीं रहती तो उसके साथ मौहब्बत भी नहीं रहती तब वही आदमी दूसरी शादी कर लेता है। सच पूछो तो उसकी मौहब्बत काम की वजह से थी।

इसी तरह नौकर अच्छा काम करता है, हुक्म का पालन करता है उसके साथ प्यार है। जब वह काम करने लायक नहीं रहता तो उसे निकाल दिया जाता है। घोड़ा अच्छा है तेज चाल वाला है उसके साथ प्यार है; जब वह घोड़ा बूढ़ा और कमजोर हो जाता है तो उसे बेच दिया जाता है। बैल खेती-बाड़ी का खूब काम करता है लेकिन जब काम करने के लायक नहीं रहता तो उसे कसाई के हाथ बेच देते हैं। जब तक उनसे काम होता है तब तक उनसे प्यार है। किसी ने सच कहा है, ''काम प्यारा है चाम नहीं।'' गुरु बाणी में आता हैः

मनमुखां केरी दोस्ती माया का संबध।

तीसरे किस्म की मौहब्बत - जो किसी के साथ किसी गुण के कारण होती है। जब वह गुण उसमें नहीं रहता तो मौहब्बत भी नहीं रहती। जिस तरह किसी का गला बड़ा सुरीला है वह बहुत सुंदर गाता है जिसे उसकी सुरीली आवाज से मौहब्बत है लेकिन जब किसी बीमारी के कारण उसकी सुरीली आवाज चली जाती है तो उसकी मौहब्बत भी

नहीं रहती। किसी आदमी में जमाल भरा हुस्न है जिसे हुस्न प्यारा है वह आदमी उसके हुस्न या जमाल के कारण उससे प्यार करता है लेकिन जब हुस्न नहीं रहता तो उसकी मौहब्बत भी नहीं रहती। आम दुनिया के लोगों का यही हाल है वे बाहरी हुस्न और जमाल पर मरते हैं, वे सच्ची मौहब्बत से खाली हैं।

चौथे किस्म की मौहब्बत - यह वह मौहब्बत है जो किसी असर कर्म या सिफत करके नहीं है या उनके न रहने से जाती न रहे। ऐसी मौहब्बत की एक ही परख है कि मौहब्बत होती है पर उसकी वजह मालूम नहीं होती। दिल में बेख्तियार मौहब्बत उछाले मारती है इसमें किसी दुनियावी हानि या लाभ का ख्याल नहीं होता। इसे जाति प्रेम कहा जाता है जो कभी नहीं बदलता। यह हमेशा रहने वाली मौहब्बत है। इस मौहब्बत का दर्जा बाकी सब मौहब्बतों से बड़ा है। इसका संबध जाति शख्सियत के साथ है। यह मौहब्बत मरकर भी खत्म नहीं होती।

जिस इंसान के अंदर जाति मौहब्बत है उसके अंदर ऊपर की तीन मौहब्बतें बेख्तियार रहती हैं। जिस तरह प्रीतम के साथ जाति प्यार होने के कारण उसकी सिफतें प्रेमी को प्यारी लगती हैं। वह उसके हुस्न जमाल पर मरता है। उसकी दिलकश आवाज उसे मोहित करती है। वह उसके किए हुए सारे कामों पर कुर्बान हो जाता है। वह प्रीतम के कदमों के निशानों को भी चूमता चला जाता है।

कहते हैं कि जहाँ-जहाँ लैला जाती थी मजनूं उसके पैरों के निशानों पर सजदे करता जाता था। सजदे में प्रीतम की जाति के साथ मौहब्बत है। वह उसकी जाति की खातिर उसकी सिफतों पर कुर्बान होता है। उसके दिल के अंदर ईश्क या प्रेम की बिजली चमक उठती है। सिफतें उसकी जाति का पानी भरती हैं। यह मिजाजी मौहब्बत का हाल है। हकीकी या सच्ची मौहब्बत के भी इसी तरह के दर्जे हैं।

आम दुनिया परमात्मा से इसलिए मौहब्बत करती है क्योंकि परमात्मा की रंग-बिरंगी दुनिया की रचना के साथ परमात्मा को मौहब्बत

है। परमात्मा धर्मियों और पापियों सबका रक्षक है। परमात्मा सेहत, संतान और नियामतों का दाता है और परमात्मा अवगुणों को बख्शने वाला है अगर इन कारणों को छोड़कर मालिक के साथ उसकी जाति की खातिर प्यार है तो इसका दर्जा सबसे ऊँचा है। मालिक के साथ दूसरे किस्म की मौहब्बतें भी स्थिर रहने वाली हैं क्योंकि मालिक सदा थिर है उसके असर, कर्म और गुण भी अटल ही रहते हैं।

मालिक की जाति का प्रेम वह है जिसमें दिल बिना किसी गर्ज के उसकी तरफ खिंचा रहता है। मालिक के प्रेमी के अंदर बिना किसी माँग के बेख्तियार प्रेम होता है। किसी सबब के बिना ही प्रेमी की कशिश बनी रहती है, जो बयान नहीं की जा सकती अगर बयान किया भी जाए तो वह बयान अधूरा होगा।

अगर यह पूछा जाए कि प्रीतम का **प्रेम** कैसा है तो यह लिखना असंभव है। आँखों से बहते हुए आँसु उस प्रेम का ख्वाव तक भी नहीं देख सकते। जान की व्याकुलता और बेसब्री उसका कोई अनुमान नहीं दे सकती अगर इस राह की तरफ मुँह किया जाए! रूह को कुछ-कुछ प्रेम की झलकें मिलती हैं इसी तरह जो कुछ इंसान पर जाहिर होता है उसे अक्ल बयान नहीं कर सकती।

सन्त-महात्मा मालिक की जाति से प्यार करने वाले होते हैं। सन्तों का **प्रेम** आम लोगों से अलग होता है। जब सब हालात ठीक हों सुख चैन हो तो प्रेम करना बहुत आसान है लेकिन इससे उल्टे हालात में भी सन्तों का प्रेम डोलता नहीं। सन्त मालिक के प्रेम में तन, मन, धन और प्राण सब कुर्बान कर देते हैं। सच तो है कि वह **प्रेम** प्रेम नहीं जो हालात के बदल जाने पर बदल जाए या किसी मुश्किल या मुसीबत आने पर झुक जाए।

शेष अगले अंक में.......